जीवक नामक बौद्ध भिक्षुक काफी प्रसिद्ध था, जिसने भगन्दर, शिरोरोग, कामला आदि विषय रोगों का उपचार करने में प्रसिद्धि पाई थी। चीरफाड़ के शस्त्र सामान्यता लोहे के बनाए जाते थे, किन्तु राजा व सम्पन्न लोगों के लिए स्वर्ण, रजत, ताम्र आदि के भी प्रयुक्त होते थे। प्राचीन आर्यों को पशु चिकित्सा का भी ज्ञान था। अनेक पशु चिकित्सा के ग्रन्थ भी मिले हैं, जैसे (1) पास्त्रकप्प का हस्तयायुर्वेद, (2) नकुल का अश्व चिकित्सा, (3) शालिहोत्र का अश्वशास्त्र, (4) दीपंकर का अश्ववैद्यक आदि। इस प्रकार भारतीय संस्कृति के प्राचीन काल में विज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त उन्नत था तथा मानव सभ्यता के विकास में इसका पर्याप्त योगदान रहा।

5.7 दर्शनशास्त्र

दर्शन शब्द 'दृष्टि' से निकला है जिसका अर्थ है–देखना या सोच। यद्यपि भारतीय दर्शन धार्मिक विश्वासों से काफी गहरे सम्बद्ध है, फिर भी एक हिन्दू के लिए नास्तिक होना सम्भव है। विश्व के रचयिता ईश्वर के अस्तित्व से इनकार करने के कारण कुछ पारम्परिक दर्शन नास्तिक भी थे। पुनर्जन्म को स्वीकारने के बावजूद भी एक देवता द्वारा शून्य से विश्व की रचना को न मानना भी सम्भव था।

बुद्ध तथा महावीर के उद्‌भव के पश्चात छः आस्तिक धार्मिक–दार्शनिक प्रणालियों का उद्‌भव हुआ। अनेक मुद्दों पर मतभेद के बावजूद सभी ने वेदों को मान्यता दी तथा आस्तिक, एक देवनादी, नास्तिक तथा द्वैत विचार रखे। फिर भी इन पद्धतियों में से एक भी कट्टर पंथ का रूप न ले सकी। इनके मतभेदों के बावजूद इन्हें विभिन्न कोणों से देखे गए एक सत्य का पूरक माना गया है। इन पद्धतियों के वास्तविक या अनुमानित संस्थापकों के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है तथा उनके नाम व्यक्तियों की जगह सम्भवतः पूरी पद्धतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हर पद्धति में अपने संस्थापक के लिए एक सूत्र है।

छहों पद्धतियां सामान्यतः युग्मों में संयोजित है–सांख्य (बौद्धिक ज्ञान पर आधारित), योग (ज्ञानेद्रियों पर अंतर्भूत तत्त्वों के नियन्त्रण पर आधारित), वैशेषिक (इंद्रियानुगत ज्ञान पर आधारित प्रयोग धर्मी विचार), न्याय दद्वन्द्वावाद पर आधारित तार्किक सोच), वेदान्तर, (आध्यात्मिक अनुमानों पर आधारित) तथा मीमांसा (पवित्र ग्रन्थों पर आधारित दैवीय तथा कर्मकांडीय सोच)।

प्रत्येक धाम की दूसरी पद्धति आध्यात्मिक ग्रन्थ की अपेक्षा एक 'विधि' ज्यादा है। पारम्परिक छः पद्धतियों के बाहर शैव सिद्धान्त जैसी पद्धतियाँ भी हैं। बौद्ध, जैन तथा चार्वाक तीन मुख्य नास्तिक पद्धतियाँ है। प्रथम दो वेदों को न मानने के बावजूद भविष्य में जीवन के किसी न किसी रूप को स्वीकारती है। परन्तु भौतिकवादी चार्वाक दोनों ही से इन्कार करता है।

5.7 (i) सांख्य

सांख्य का शब्दिक अर्थ है–'गणना'। अर्द्ध–मिथकीय मुनि कपिल द्वारा प्रस्थापित यह द्वैत सत्यवादी दर्शन है। प्राचीनतम प्राप्त सांख्य ग्रन्थ ईश्वर–कृष्ण की 'सांख्यकारिका' है।

इस पद्धति में जिन दो अन्तिम शाश्वत सत्यों को पहचाना गया है वे हैं–पुरूष एवं प्रकृति। प्रकृति एकल, सर्वव्याप्त तथा जटिल पदार्थ है जो विश्व में अगणित विविध रूपों में विकसित होती है। सत, रज तथा तम दूसरे तीन महत्त्वपूर्ण घटक अथवा गुण है। प्रत्येक गुण के अपने विशिष्ट लक्षण हैं, जो कुछ हद तक दूसरे की प्रकृति के विरुद्ध होने पर भी सदा सह–अस्तित्वमान, संयुक्त एवं सहयोगबद्ध होकर विश्व की प्रत्येक वस्तु का निर्माण करते हैं।

5.7 (ii) योग

सांख्य से अनेक समानताएँ रखनेवाला ये एक आस्तिक दर्शन है। शाश्वत आत्मा से ही वैयक्तिक आत्मा का जन्म होता है। सांख्य सांख्य की इस मान्यता से भाग की सहमत है। जैसा कि श्वेताश्वेतर उपनिषद् कहता है कि सांख्य ज्ञान और योग इसका अनुप्रयोग, भोग पद्धति सांख्य का दैनिक प्रयोग करती है। पंतजलि को भोग सूत्रों का प्रेणता माना जाता है।

5.7 (iii) वैशेषिक

पैराणिक ऋषि कणाद (उलूक भी कहा जाता) द्वारा प्रस्थापित तथा नैरोषिक सूत्रों पर आधारित (1 ई.) यह पद्धति आरम्भ में अनीश्वरवादी थी। आरम्भिक वैशेषिकों ने ब्रह्माण्ड के परमाण्विक रूप की उद्घोषणा की। यह इस धारणा पर आधारित था कि आत्मा, चेतना समय, स्थान तथा मस्तिष्क को छोड़कर विश्व की प्रत्येक वस्तु अणुओं के विभिन्न संयोगों से बनी प्रत्येक अणु अपनी छोटी से छोटी स्थिति को प्राप्त करने के पश्चात् भी भौतिक पदार्थ बना रहता है।

5.7 (iv) **न्याय**

गौतम अपना गौतम अक्षपात द्वारा संस्थापित यह तार्किक वस्तुवादी दर्शन है। यह सम्भवतः द्वितीय सदी ई. में रचित न्यायसूत्र पर आधारित है। न्याय शिक्षा के अनुसार विचार, विश्वास, सोच तथा भावनाएँ सभी मस्ष्कि पर आश्रित हैं क्योंकि बिना इसके उन्हें सोचना सम्भव नहीं होगा।

5.7 (v) **वेदांत**

वेदांत का अर्थ है–वेदों का अंत अथवा वैदिक कल्पना, सिद्धान्तों का शिखर 2 से 45 ई. के बीच बादरायण द्वारा प्रवर्तित 'ब्रह्मसूत्र' या 'वेदान्त सूत्र' इसके आधारग्रन्थ हैं। पूर्व तथा उत्तरमीमांसा के साथ पारम्परिक वेदान्त में वेदों की सबसे वृहत टीकाएं है। अद्वैत, विशिष्टद्वैत तथा द्वैत वेदान्त की मुख्य धाराएं है।

5.7 (vi) **मीमांसा**

इसका अर्थ आलोचनात्मक परीक्षण अथवा परावर्तन द्वारा किसी समस्या का हल है उपनिषदीय शिक्षाओं पर आधारित आदिमीमांसा को उत्तरवर्ती तथा ज्यादा जटिल वेदान्त उत्तरमीमांसा या ब्रह्ममीमांसा से अलग करने के लिए इसे 'पूर्व मीमांसा' भी कहा जाता है। जैमिनी द्वारा परिवर्तित इस नास्तिक पद्धति को 'मीमांसा सूत्र' में इकट्ठा किया गया है।

5.8 बोध प्रश्न

प्रश्न 1. शास्त्र शब्द से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 2. भारतीय धर्मशास्त्र के विषय में आप क्या जानते हैं ?

प्रश्न 3. गणितशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, आयुर्वेदशास्त्र, दर्शनशास्त्र विषय पर टिप्पणियाँ लिखिये।

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

द1) बलदेव उपाध्याय–भारतीय शास्त्रों का इतिहास

द2) पी.वी. काणे–संस्कृत साहित्य का इतिहास